हेक्टर—ले महाशय कप्तान साहब, अब क्षमा कीजिये और चलने का सामान कीजिये।

यह सुन्तेही झटपट बिस्तरे अस्वाब झोले में डाल दिये गये और सब आगे बढ़े। सर विल्फ्रेड की राइफल कप्तान साहब के पास थी और कप्तान साहब की चेको ने ले ली। वही चेको जो सदैव पीछे रहता था रैफल हाथ में आतेही तीन कदम सब से आगे हो गया।

योंही बढ़ते हुये सब उस भयानक पुल के निकट जा खड़े हुये। दो रस्सों पर दोनों पैर जमाकर उस पार जाना चाहिये! कैसा भयानक समय था। और सब तो कदाच् उस पार चले भी जावें, परन्तु कप्तान साहब का जाना तनिक टेढी खीर थी।

हेक्टर ने उसी समय एक तदबीर सोची, रस्सी की सीढ़ी का एक सिरा तो स्वयं पकड़ा, और दूसरा चेको को थँभाकर उस्पार भेजा। यह तो एकही फुरतीला जवान था, देखते २ उस्पार जा खड़ा हुवा। और वहां हेक्टर के आज्ञानुसार रस्सी के सिरे को उस चट्टान के ऊपर जिस्में कि पुल दबा था, एक दूसरी चट्टान में खूब कसके बाँध कर रख दिया। इधर हेक्टर ने भी अपनी ओर का सिरा किसी चीज़ में मजबूती से कस दिया। अब यह रस्सी एक डंडे की तरह हो गई। पुल पर का चलनेवाला एक हाथ से इसे पकड़ कर धीरे २ उस्पार जा सक्ता था। इसी तरह हेक्टर तथा फिलप उस्पार उतर गये। इनलोगों के उप-

रान्त कप्तान साहब भी चले, परन्तु बीच में आते २ उनके पैर डगमगाये, पैरों के लड़खड़ाते ही इन्हों ने रस्सी की सीढ़ी को दृढ़ता से पकड़ लिया। और उसी के सहारे पर हो गये। परन्तु रस्सी पर जोर पड़तेही वह अपनी जगह से टूट गई और कप्तान साहब एक चीख़ मार कर नीचे जा रहे।

## चौबीसवां बयान।

केवल कप्तान साहब की पकड़ ने कप्तान साहब के प्राण बचाये। यदि वे रस्सी को दृढ़ता से पकड़े न होते तो निस्सन्देह नीचे जा रहते। अब वे रस्सी पकड़े हुये नीचे झूल रहे थे और सहायता के निमित्त बार २ चिल्लाते जाते थे। हेक्टर तुरन्त इनकी सहायता को पहुँचा, और सबने मिल कर इन्हें ऊपर खींच लिया।

कप्तान—( हाँफ कर ) मैं सर विल्फ्रेड के पास जाही चुका था, वह तो कहो बच गया, केवल घुटनोंही के माथे गई।

वास्तव में घुटनेही के माथे गई, और कोई कड़ी चोट न थी। अब सबने फिर आगे की राह ली, और दिनभर बराबर बढ़ेही चले गये। कहीं दूसरी रात न इस गुफा में इन्हें बितानी पड़े, इस ध्यान ने इन्हें और शीघ्रगामी बना दिया। अनेक बार जब वह राह घूमती थी, तो इन्हें निश्चय हो जाता, कि अब आगे गुफा का अन्त है, पर नहीं! आगे बढ़तेही इन्हें अपनी चूक

भली भांति मालूम हो जाती ! योंही चलते २ संध्या के चार बज गये, परन्तु कोई चिन्ह गुफा के समाप्त होने का दिखलाई नहीं दिया। यह देख कर सब एक स्थान पर एकत्रित हो गये, इनकी सूरत से घबड़ाहट झलक रही थी, परन्तु हेक्टर ने अपनी व्यग्रता को साहस करके छिपाया और कहने लगा।

हेक्टर—मुझे पूरी आशा है, कि अब खुला मैदान कहीं बहुत दूर नहीं है। आप लोग घबड़ाइये नहीं, साहस करके आगे बढ़े चलिये। परन्तु पहले कुछ खा के दृढ़ तो हो जावें। इससे निश्चिन्त रहियेगा, कि आज की रात यहां न बितानी पड़ेगी।

उसके साथी यह सुनकर बैठ गये, सभों ने शीघ्रता से भोजन किया, और फिर रात के भयसे वे लोग जल्दी २ आगे बढ़ने लगे। धीरे २ संध्या भी होने लगी। प्रकाशमयी गुफा में अन्धकार छाने लगा, परन्तु इस रास्ते में कोई नई बात न हुई। वह उसी तरह बराबर आगे चली गई थी। प्रातः कालसे इस्समय तक पूरे २० मील वे चल चुके थे, परन्तु अभी लों राह समाप्त होने के कोई लक्षण दिखलाई न देते थे।

चेको—हा ! वारा एल गोरो—

कप्तान—हां चेको तुम बहुत ठीक कहते हो, यह वास्तव में मृत्यु की गुफा है। दो मनुष्यों के प्राण तो जाही चुके, और हम लोग भी यदि बाहर आज निकले तो मरे हुओं से कुछ कम न होंगे। ईश्वर की सौगन्ध ये जङ्गली बहुतही ठीक नाम रखते हैं !

फिलिप—महाशय मैंने तो पहलेही निवेदन किया था, कि लौट चलिये, लेकिन आप न सुनैं तो कोई क्या करे !

कप्तान साहब यह सुनकर कुछ कहनेहीवाले थे, कि हेक्टर जो कुछ दूर आगे बढ़ा था, चिल्ला उठा "पहुँच गये !"

## पचीसवां बयान ।

हेक्टर—वह देखो मेरी उँगली के सामने ! वहां से रास्ता घूम गया है । वह उस्की दीवार दिखलाई पड़ती है । इस्पर जो चमक है, वह जानते हो, काहे की है ? यह बाहर के धूप की चमक आ रही है । अब बढ़ो आगे हम पहुँचे दाखिल हैं ।

इस्के कहने की कोई आवश्यक्ता न थी, सब तीर की तरह उसी ओर चले, और पन्द्रह मिनिट के उपरान्त सब मृत्यु के पञ्जे से निकल कर एक सुन्दर हरियाले स्थान में खड़े हुये। अन्त; "मृत्यु की गुफा" अन्त को पहुँचही तो गई ।

इन लोगों के सिर पर बड़े २ और ऊँचे पहाड़ खड़े आकाश से बातें कर रहे थे । इनके सामनेही एक और छोटी पहाड़ी थी, जो सिर से पैर तक बड़े २ और हरे वृक्षों से लदी हुई थी । इनके बाँये, और दाहिने घना जङ्गल लगा हुवा था।

हेक्टर—वह सोता अवश्य हमारे दाहिने होगा, और हमसे कुछ बहुत दूर नहीं है । यह पगडण्डी जो हमारे सामने है, उस सामनेवाली पहाड़ी पर जाती है । चलो उसी पर चढ़कर देखें,

कि वह सोता कहां है, और यह भी कि यहां कोई जीव जन्तु हैं कि नहीं।

सब लोग उसी पर चले, पगडण्डी के देखने से यह भली भाँति विदित होता था, कि इसपर बहुत दिनों से मनुष्य चलते फिरते हैं। वह सब उस पहाड़ी पर जा पहुँचे । हेकूर उनसे कुछ आगे था। वह एक चट्टान पर खड़ा हो गया, और इधर उधर देखने लगा। ईश्वर जाने उसने देखते २ कौन सी ऐसी आश्चर्ययुक्त बात देखी, कि वह जोर से चिल्ला उठा । इस्के साथी भी यह आश्चर्य व्यापार देख तुरन्त उस्के पास पहुँच गये, और जो कुछ उन्हों ने देखा, उस्से वे भी चकित हो, एक टक एक ओर देखते रह गये।

मनुष्य के नेत्र कदापि ऐसे आश्चर्ययुक्त और कौतूहल-वर्धक दृश्य पर न पड़े होंगे । डूबते हुये सूर्य की लाल २ किरनें पर्वत श्रेणी, तूरमाँ की बरफ से ढँकी हुई, श्वेत वर्ण की चोटियों पर पड़ रही थीं, और इन दोनों का चमकीला और रङ्ग विरङ्गा साया एक बड़े, भारी, प्रशस्त और विशाल नगर पर पड़ रहा था; जो इन मुसाफिरों के ठीक नीचेही फैला हुआ था।

पाठकगण ! यह नगर कोई एफ्रीका या एशिया के सामान्य नगरों की तरह नहीं बना था, बरन् प्राचीन काल के बड़े २ नगरों—जैसे रोम, एथेंस, कारथेज, इत्यादि से, टक्कर मार रहा था। सहस्त्रों मीनार, सैकड़ों, बुर्ज, और अनगिनती गुम्बदों को; एक

लम्बी चौड़ी और दृढ़ शहर पनाह अपने घेरे में घेरे हुई थी। नगर के उत्तर और दक्षिण दो पहाड़ियाँ थीं, जो ढालुवाँ होते२ शहर पनाह की दक्षिण और उत्तर की दीवारों में आ मिली थीं। उसी में से उत्तर की पहाड़ी पर हमारे मुसाफिर खड़े थ। नगर के पूर्व दिशा से एक नदी, लहरें मारती, शहर पनाह में होती हुई नगर के भीतर प्रवेश करती है, और फिर नगर के बीचों बीच से होती हुई पश्चिम दिशा से बहती नगर के बाहर हो जाती है। यही मृत्यु की गुफा का सोता था। इसी में सर विल्फ्रेड तथा टौंक गिरे थे। अस्तु ! अब यहाँ सब से विचित्र बात तो इन लोगों को यह देखने में आई कि सारा नगर लाल पत्थरों का बना था जो सूर्य की लाल २ किरनों में लाल अंगारे की तरह चमक रहा था।

हेक्टर—लालनगर !

कप्तान—वास्तव में लाल नगर ! टौंक ने ठीक कहा था वह देखो वह सोता है।

बड़ी देर तक वह उसी ओर देखते रहे। हर घड़ी उन्हें, उस बड़े कोलाहल के सुन पड़ने की आशा थी, जो प्रायः बड़े २ नगरों में हुआ करता है। परन्तु नहीं ! वहाँ चारों ओर एक अटल सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं से कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था।

अन्त इस विचित्र नगर के रहनेवाले कहाँ हैं ? सोते हैं या कबरों में विश्राम करते हैं ?

सबको इस आखिरी बातही पर विश्वास हुआ ! तो अब आपत्ति तो यह है कि उक्त नगर का कौन नाम उपयुक्त समझा जावे । "नगर लाल" वा "नगर शून्य" ।

## छब्बीसवां बयान ।

कप्तान—ईश्वर की सौगन्द टौंक सच कहता था । मृत्यु की गुफा से निकले हैं । लालनगर सामने ह, परन्तु देव और राक्षसों के बारे में तो हमारी जान धोखाही धोखा है, बिशेषतः मुझे तो निश्चय है, कि यहां देव, भूत, कोई नहीं ।

हेक्टर—देखिये सब मालूम हुआ जाता है । इस्के पहिले कि रात हो जाय, हम लोगों को कोई स्थान सोने के लिये स्थिर कर लेना चाहिये । तनिक पहाड़ी से उतर कर चन्द्रमा की चाँदनी में नगर की शोभा देखने की इच्छा करती है । मेरा तो दिल चाहता है कि इन बड़ी २ अट्टालिकाओं में से एकमें रात भर आराम करता ।

कप्तान—अरे भई तो इस बात से नहीं कौन भड़ुवा करता है ! परन्तु इस्का पहिले निश्चय हो जाना चाहिये कि यह नगर उजाड़ है ! उल्लू और चमगीदड़ों के अतिरिक्त कोई नहीं रहता ! बस इस्का निश्चय कर लो तो चलो ।

वे लोग वहां से बातें करते उतरे । अब सन्ध्या की लालिमा केवल रह गई थी । सोता उसी तरह चुपचाप लहरें मारता नगर के भीतर चला जाता था । ये लोग पाहिले सोते के किनारे

पहुँचे। भोजन निकाल कर सबने आनन्द से खाया, और सोते से जल पीकर फिर नगर की ओर बढ़े।

अभी ये लोग कुछही दूर गये होंगे कि सहसा सिंह के गरजने का शब्द सुन पड़ा और साथही दूसरे पशुओं के भी शब्द सुन पड़ने लगे।

हेक्टर—इन लक्षणों से तो यही प्रतीत होता है कि दूर तक कहीं मनुष्यों का पता भी नहीं है—आगे इश्वर जाने!

कप्तान—यदि मेरे मृत साथियों के मृत देह, वहाँ से बहे होंगे तो हम उन्हें यहीं पायेंगे।

फिलिप—उनके मुरदे तो यदि आप क्षीरसागर से लेकर एक छोटे नाले पर्यन्त ढूंढ़ डालें तो भी न मिलेंगे।

इसपर कप्तान साहब कुछ न बोले। अब रात भीग रही थी, और चन्द्र देव, धीरे २ इन मुसाफिरों की ब[illegible]ी हुई हिम्मतों को देखने के लिये आकाश के नीचे, मखमली पर्दे से अपना सिर निकाल चुके थे। इधर हमारे पथिक कुछही दूर और आगे बढ़े होंगे कि इन्हें एक औंधी नाव भूमि पर पड़ी हुई मिली। हेक्टर को यह देख कर बड़ीही प्रसन्नता हुई और वह कहने लगा। "कप्तान! यह लो! एक डोंगी पड़ी हुई है इसे जल में डाल कर बैठ लो और आनन्द से नदी में से होते हुये नगर में प्रवेश करो।"

कप्तान—भई वाह! बहुतही अच्छे! ले ढकेलते जाओ इसे!

चेको—नः नः पानी में मत जाओ देवँ लोग मारडालेगा।

फिलिप—हाँ कहता तो यह ठीक है !

हेक्टर—अजी आओ भी ! यह अशान्ती तो एकही बोदे दिल का मनुष्य है ।

कप्तान साहब और हेक्टर, इसके उपरान्त नाव ढकेलने लगे। यह देख कर उन दोनों ने भी हाथ लगाया। आनन फानन में नाव पानी में कर दी गई। कप्तान साहब डांड़े पर गये और हेक्टर ने किलवारी ( पतवार ) हाथ म ली । नाव धारे में चलाई जाने लगी । डाँड़े मारती समय ये लोग बहुत भय खाते थे । अस्तु ! तो नाव चली, और कुछही देर के उपरान्त नगर के पास पहुँच गई ! ये लोग एक मेहराबी दार दरवाजे से, जो नदी की चौड़ाई के बराबर चौड़ा ; जल के जाने के लिये बनाया गया था,—भीतर पहुँचे ।

जो कुछ अब इन लोगों ने देखा, वह बयान से बाहर है। नदी के दोनों किनारों पर, पक्की और चौड़ी सड़क बनीं हुई थीं, और इन पक्की सड़कों के दोनों ओर लगातार ऊँचे २ खुरम क वृक्ष लगे हुये थे । इसके अतिरिक्त नदी के जल से लेकर उन सड़कों पर्यन्त अनगिनती, पक्की, साफ और चिकनी सीढ़ियां लाल पत्थरों की बनाई गई थीं। थोड़ी २ दूर पर कितने बँगले, और कितनेही बुर्ज, नदी के जल से बिलकुल सटे हुये और ऊपर की सड़क की ऊँचाई के बराबर बने हुये थे । सड़कों के उपरान्त दोनोंही ओर सुन्दर और बड २ महलों का सिल सिला नदी के साथही साथ आगे बढ़ता चला गया था । इन मकानों में

बहुतेरे पुराने और बे मरम्मत होने के कारण टूट गये थे। इस्पार से उस्पार जाने के लिये असंख्य पुल लाल पत्थर के बने हुये थे।

इतने में इन्हे चाँदनी में दूर से कुछ चमकता दिखलाई दिया। जब वे इसके निकट पहुँचे तो क्या देखते हैं कि नदी के दोनों ओर, आध २ मील के चौखूटे दो मैदान हैं इनका फर्श सङ्गमरमर का था। इन मैदानों के बीचों बीच एक २ बुर्ज या मीनार लाल पत्थर के बने हुये थे। इस मीनार की सीढ़ी भी सङ्ग मरमर की थी।

यह नगर का चौक जान पड़ता था, स्थान २ पर पत्थर की मूरतें भी खड़ी की गई थीं। थोड़ी दूर पर जाकर नाव, जो आपही आप बह रही थी; एक सलामी–नुमा ढेर या पुश्ते पर लग गई। पुश्ते के ऊपरही एक बड़ी भारी अट्टालिका खड़ी थी। जिस्के देखने से जान पड़ता था कि यह किसी जाति का देवालय है।

हेक्टर—शगुन अच्छे हैं। अब हम उतरते हैं और तनिक इधर उधर घूमेंगे, कदाच् कहीं मुलायम बिछौने हमारी राह देख रहे हों, या कहीं उत्तमोत्तम भोजन हम लोगों के लिये टेबुलों पर चुने रक्खे हों। कहीं यह। "अलिफलैला" का वह पुराना नगर तो नहीं है?

कप्तान—अरे भाई हमें तो एक तमाखू का थैलाही मिलजावे तो हम समझें कि हमारे हाथ अतुल संम्पत्ति लग गई!

परन्तु हेक्टर चलो, चल के इस मकान को भीतर से देखें, जिस्की बनावट देवालय के सदृश है।

यह सुन्तेही एक के उपरान्त दूसरे ; योंही सभीलोग उतरकर उस देवालय की ओर चले, और बड़ी सचेतता से, साये से होते हुये उस देवालय में जा पहुँचे। भीतर से देखने पर जान पड़ा कि वास्तव में यह एक मन्दिर था जो स्थान २ से टूट गया था।

हेक्टर अपने साथियों को इधर उधर टहलता छोड़ कर मन्दिर के भीतरी भाग में घुस गया। इस्के साथी बाहरी भाग को देख रहे थे ; कि भीतर से हेक्टर के चिल्लाने की आवाज़ आई "भीतर शीघ्र आओ"।

फिलिप और चेको तो आवाज़ सुन्तेही सिटपिटा के वहीं ठहर गये, भीतर जाने का साहस न हुआ, परन्तु कप्तान यह आवाज़ सुन्तेही तुरन्त भीतर पहुँचा और वहाँ पहुँच कर क्या देखता है कि हेक्टर चाँदनी में एक हड्डियों के ढेर के ऊपर झुका है, और इस्का चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया है।

हेक्टर—(काँपते हुये) यह देखो, यह देखो–यह हड्डियाँ हैं, और वह मनुष्यों की खोपड़ियाँ पड़ी हैं, इधर राख और कोयलों का ढेर है, और यह अभी गरम भी है! भला कुछ समझे कि यह क्या है? आदमी के खानेवालों देवों की करतूत!

कप्तान अच्छी तरह समझ चुका था और वह भी काँप रहा था, हेक्टर की बात का वह उत्तर देनेही को था कि हठात् इनके साथियों की बाहर से एक दबी हुई चिल्लाहट सुनाई दी।

## सत्ताईसवाँ बयान।

"हेक्टर! कप्तान जोली! यदि प्राण प्यारे हों तो शीघ्र बाहर आओ"।

यह फिलप का कण्ठस्वर था। हेक्टर यह सुन्तेही कप्तान साहब का हाथ पकड़ कर बाहर की ओर दौड़ा, और यहां आकर क्या देखता है, कि फिलिप तथा चेको नदी की ओर काँपते हुये देख रहे हैं। इन दोनों को देखकर फिलिप ने धीरे से कहा, "देखो सावधान! किसी प्रकार का शब्द न होने पावे। वह देखो हम लोगों की डोंगी के निकट कौन है?

अब जो कुछ इन लोगों ने देखा वह भीतर के भयानक दृश्य से भी कहीं बिशेष भयावना था। इन लोगों के सामने, एक भयानक देव; ठीक वैसाही, जैसा शारी नदी के टापू पर पकड़ा गया था, किश्ती पर झुका हुआ आश्चर्य से इधर उधर देख रहा है। हथियारों में से एक कमान तथा एक बरछा उस्के पास था।

कप्तान—वह देखो डोंगी के भीतर चला, परन्तु भला इस गदहे को वहां मिलनाही क्या है।

हेक्टर—(काँप कर) ऐ महाशय! यदि वह डोंगी ही लेके चला जावे तो बहुत अच्छा है; परन्तु वह केवल—"

सा—हे परमेश्वर वह तो इसी ओर आता है।

सचमुच वह देव उसी मकान की ओर बरछा हाथ में लिये बढ़ा चला आता था।

हेक्टर—वह इसी ओर आता है! अब क्या करें? यदि बन्दूक छोड़ते हैं, तो उसके दुष्ट साथी जो कहीं निकटही होंगे, सचेत हो जाँयगे।

कप्तान—हाय! वह हमी लोगों को ढूँढ़ता भी मालूम होता है, देखो वह किस तरह फूँक २ कर कदम धरता, और वृक्षों के सायों को देखता भालता आता है।

हेक्टर—अहाहा! बस एक बात सूझी है।

यह कह कर वह चेको के पास गया, जो सिर से पैर तक बेंत की तरह काँप रहा था। हेक्टर इसे एक खम्भे के पीछे ले गया, और बोला "चेको, देख तेरे पास तीर कमान है, तुझे अवश्य उस जङ्गली को मारना होगा, और वह भी निस्तब्धता से; यदि तू ऐसा नहीं करता तो हम सबके सब मारे पड़ेंगे; और सबसे पहिले तो बच्चा, वह तुम्हीं को कच्चा खा जायगा। हिम्मत बाँध और सच्चा निशाना बाँध के लगा तो एक तीर! कोई कठिन बात नहीं है।"

चेको अच्छा तिरन्दाज़ था। हेक्टर की बात सुन्तेही उसने हिम्मत बाँधी, और एक तीर सीधी करके निशाना ताकने लगा। उधर

वह जङ्गली निधड़क इनकी ओर बढ़ा चला आता था। उस्का स्वरूप बड़ाही भयात्रना था, उस्के लम्बे २ बाल काले नागों की तरह उस्के सिर पर लपटे हुये थे। वह सिंह की खाल का लंङ्गोट अपने कमर में कसे हुये था। आते २ कोई ६ गज के अन्तर पर वह रुक गया। उस्के रुकतेही, हेकुर ने चेको से कहा "बस मार दे!"

चेको अब बड़ेही शान्त भाव से बैठा था, यह सुन्तेही उसने निशाना ताका, और तीर, कमान से छोड़ दिया।

इस्के उपरान्त क्या हुआ, वह उन्हीं लोगों के चित्त को कुछ अच्छी तरह जान पड़ा होगा। वह देव, जो यह सोच रहा था कि आगे बढ़ूं—अकस्मात् चिल्लाता हुआ पीछे हटा, और दाहिने हाथ को पकड़कर चीख़ पर चीख़ मारता एक ओर जाकर अदृश्य हो गया।

तीर इस्की बाँह में लगा था। चेको ने बड़ीही चूक की थी। हेक्टर यह देखतेही चिल्ला उठा "पाजी! बेवकूफ! देख क्या आपत्ति तू लाया! इस्से अच्छा तो मैं स्वयं तीर मार सक्ता था। कप्तान, फिलिप, डोंगे की ओर भागो"।

यह कहकर हेक्टर भी उसी ओर चला, चेको पहलेही से भाग कर नाव में जा छिपा था। जब हेक्टर नाव में पहुँचा तो सब बैठ चुके थे। यह भी उसपर बैठ गया और नाव आगे बढ़ाई गई। उसी समय उस घायल देव की चिल्लाहट एक ओर

से सुन पड़ी और साथही और भी बहुत सी चिंघाड़ें दूसरे ओर से सुनाई दीं।

कप्तान साहब तो, जिस ओर से कि इनलोगों ने नगर में प्रवेश किया था उसी ओर चले, परन्तु हेक्टर ने बाधा देकर कहा "नहीं! जिधर से आये हो उधर जाना बेवकूफी है। वरन आगे बढ़ो नगर के दूसरी ओर रक्षा मिलेगी।

फिलिप—हेक्टर! तुम हम सब को तवाह किया चाहते हो, तो यह असम्भव है। जिधर से आये हो उसी ओर फिरो, वहाँ से तमूरान पहाड़ पार कर के और बसूरी लेंड से होते हुये मिश्र देश की राह से मकान लौट चलो। मैं अब यहाँ नहीं ठहर सक्ता।

हेक्टर—फिलिप! अब और कुछ न कहो! हमलोगों को तनिक २ सी बातों पर झगड़ा उठाना कुछ भला नहीं जान पड़ता है।

कप्तान—यही ठीक है! हेक्टर मैं तुम्हारे और तुम्हारी राय दोनों के साथ हूं।

अभी यह लोग सम्भल कर बैठे भी न थे, और यही सब बकवाद कर रहे थे कि एक ओर से वही देव, चिल्लाता हुआ अपने अन्य साथियों सहित इनके सामने किनारे पर दौड़ता आ पहुँचा। यह अपने साथियों से दो कदम आगे बढ़ा हुआ था। कप्तान साहब ने यह देखकर बन्दूक सीधी की और

चाहा कि गोली मार दें, परन्तु हेक्टर ने रोक दिया और कहने लगा इस्से अन्य राक्षस भी सचेत हो जाँयगे।

नगर के जिस भाग में ये लोग इस समय थे, वह बहुत ही पुराना हो गया था और स्थान २ पर सरपत के झुंड खड़े थे। वह देव, इन्हीं सरपतों के झुण्ड में से एक में लड़खड़ा कर गिर पड़ा और इस्के गिरने तथा उठने तक ये लोग कुछ दूर हो रहे।

कप्तान—ईश्वर की सौगन्द टौंक ने सच कहा था, एक २ शब्द—"

सहसा हेक्टर के चिल्लाने से कप्तान साहब की बात अधूड़ी रह गई, और उन्होंनें उस्के बताये हुये स्थान की ओर देखा, तो जान पड़ा कि बीच नदी में एक टूटा बुर्ज है, और उसपर चार देव इनके आने की बाट जोह रहे हैं।

कुछ देर तक तो सब एक सन्नाटे में रहे, अन्त को हेक्टर ने उठा के बन्दूक दागही तो दी। "दाँय" और साथही आगेवाला हबशी, मुंह के बल नदी में गिर पड़ा। तीन देव यह देखकर चिल्ला उठे, अभी ये सँभले भी न थे कि फिलिप और कप्तान ने मिलके बाढ़ मारी "दाँय! दाँय" और अबकी दो देव बुर्जही पर लोट गये, अब केवल एक देव चिल्लाता हुआ वहाँ खड़ा रह गया।

इस बाक़ी के बचे हुये जङ्गली ने अपना बरछा घुमा के इनलोगों पर मारा, परन्तु वह चेको की बाँह से लगता हुआ नाव की दीवार को छेद कर रह गया। फिलिप ने इसे निकालना चाहा परन्तु

हेक्टर ने रोक दिया। क्योंकि इसके निकलतेही नाव में पानी की धार आने लगती।

अब इनके आगे, पीछे, इधर, और उधर, देवही देव दिखाई दे रहे थे। पत्थर तीर और बरछों की बौछार चारों ओर से हो रही थी। एक स्थान पर बहुत से देव नदी के किनारेही खड़े थे और जैसेही डोंगी वहाँ पहुँची इन्होंने तीरों की बर्षा आरम्भ कर दी। अभाग्य बश चेको की बाँह ऊपर थी और एक तीर आकर उसी में बैठ गया। तीर के लगतेही यह चिल्ला उठा और उछल कर पानी में जा पड़ा। यह देखतेही हेक्टर उसकी सहायता को झपटा परन्तु वह हाथ न आया, और प्रत्येक क्षण इनसे दूर होता जाता था। फिर कुछही देर के उपरान्त गोता मार कर न जाने किस ओर चल दिया।

इसी बखेड़े में ये लोग कुछ आगे बढ़ आये। जङ्गली भी इनके पीछे थे। नाव में जल भरा आता था, इतने में एक तीर सनसनाता हुआ आया और कप्तान साहब के बाँये टाँग में बैठ गया। इसके लगतेही ये तिलमिलाने और तड़पने लगे, इसी हलचल में नाव में बहुत सा जल आ गया और साथही वह बड़े बेग से बहकर किनारे की ओर चली, और वहाँ पहुंचकर उसने किनारे से, एक बड़ी कड़ी टक्कर ली।

हेक्टर—बन्दूकें भरलो और दौड़ते हुये नगर के फाटक की ओर चलो!

हेक्टर यह कहकर स्वयं नाव से कूद कर भागा। कप्तान जोली उस्के बगल में थे, और फिलिप इनके पीछे था। जङ्गली भी यह देखकर इनके साथही बढ़े थे परन्तु एक स्थान पर ठहर कर और इन तीनों ने मिलके जो एक बाढ़ बन्दूकों की मारी तो वे सब ठहर गये।

इधर ये लोग लगातार आध घण्टे तक बराबर दौड़ते गये। अब कोलाहल किसी ओर से न सुन पड़ता था। बेचारे कप्तान जोली, गिर गिर पड़ते थे, प्यास के मारे इनका दम निकला जाता था। एक स्थान पर सब ठहर कर हाँफने लगे।

फिलिप—भई मुझे तो बड़ी प्यास लगी है।

कप्तान—तो यहाँ किस भकुवे को नहीं लगी है। और सुनो जल के बहने का कहीं निकटही शब्द भी तो सुन पड़ता है।

हेक्टर ने भी सुना। सचमुच कोइ नदी, कहीं निकटही बह रही थीः—इसलिये हेक्टर जल की खोज तथा उस्के लाने के निमित्त चला। ये लोग एक स्थान म उस्की प्रतीक्षा करने लगे।

हेक्टर कुछही दूर गया था कि उसे एक बड़ाही रमणीक बाग दिखलाई पड़ा। इधर से उस्के भीतर की राह न थी परन्तु यह इसे निश्चय हो गया कि इसी के भीतर जल है। यह स्थिर कर हेक्टर तुरन्त दीवार फाँद गया, परन्तु अभी इसने भीतर की भूमि पर पैर रक्खेही थे कि बाहर से कप्तान साहब ने चिल्लाकर कहा "हेक्टर! हम घर लिये गये, अपनी प्राण रक्षा करो।" इस्के उप-

रान्त देवों की चिंघाड़ें सुन पड़ीं और फिर पाँच मिनिट के उपरान्त वही पहिले जैसा सन्नाटा छा गया।

हेक्टर—(मन में) सचमुच कप्तान ने ठीक कहा! मैं अपनी प्राणरक्षा करूंगा।

यह कहकर वह आगे बढ़ा और किसी सुरक्षित स्थान की खोज करने लगा। यह कुछही दूर और बढ़ा था कि इसने घने वृक्षों के बीच में एक वृहत् अट्टालिका को खड़े पाया। बनावट से इस्के प्रतीत होता था कि यह राज महल है।

डरा हुआ हेक्टर, चौंकता चमकता इस्के भीतर पहुँचा। सीढ़ियों के उपरान्तही उसे एक बड़ी दालान मिली। चाँदनी जो बाहर खूब छिटकी हुई थी, उस्का साया यहाँ पर पड़ रहा था। यह साहस करके धीरे २ और भी आगे बढ़ा।

यह दालान, आगे बढ़ के एक बड़े कमरे से मिल गया था। हेक्टर ने इधर उधर देखकर उस्में भी पैर रक्खा। परन्तु ततक्षणात् उसे यह मालूम हो गया कि इस्के अतिरिक्त वहाँ कोई और भी है। हेक्टर यह जानकर इधर उधर नेत्र फाड़ २ के देखने लगा, परन्तु कुछ न मालूम हुआ। अन्त एक काली शकल एक कोने में दिखलाई पड़ी जो बराबर इस्की ओर बढ़ रही थी।

हेक्टर जिस स्थान पर था, वहीं दम साधकर और बन्दूक सीधी करके खड़ा रह गया। वह शकल और निकट आई! यह देख हेक्टर काँपने लगा! शकल और बढ़ी! यह देखकर

हेक्टर के हाथ से बन्दूक छूट गई और भूमि पर गिर पड़ी; इस्के कुल शरीर में सनसनाहट चढ़ गई, इस्का चेहरा मुर्दे की तरह सुफेद हो गया। इसने अपने सामने सर विल्फ्रेड की प्रेतात्मा को खड़ी पाया !!!

हेक्टर के सिर से झर २ पसीना बहने लगा; और वह कई मिनिट तक ज्ञानशून्य हो तस्वीर की तरह वहीं खड़ा रहा, अन्त वह दोनों हाथ फैलाकर उस शकल की ओर बढ़ा और उस्को लपट कर कहने लगा "आहा ! सर विल्फ्रेड, मैं तुम्हें देख के कितना प्रसन्न हुआ हूं।"

सर विल्फ्रेड—हेक्टर ! तुम यहाँ कहाँ ?

अच्छा तो सर विल्फ्रेड जीवित थे। जिस प्रतिमा को हेक्टर ने सर विल्फ्रेड की प्रेतात्मा समझ रक्खा था वह यथार्थ में सर विल्फ्रेडही थे ! मरे हुये ने पुनर्जन्म पाया !

सर विल्फ्रेड—कप्तान जोली कहाँ हैं ?

इसपर हेक्टर ने सारी कहानी कह सुनाई जिसे सुन के सर विल्फ्रेड कहने लगे "ओहो—चेको डूब गया, तुम्हारे साथी धर लिय गये, और तुम्हारी भी अवस्था कुछ अच्छी नहीं है। प्यारे हेक्टर ! मुझे भी तुम्हारीही ऐसी कठिनाईयाँ झेलनी पड़ीं हैं। ज्योंही हम टौंक सहित पानी में गिरे; तो अभी पैर पृथ्वी में भी न लगे थे कि मैं बहुत दूर बह गया, और बहते हुये आकर यहाँ कुछ दूर आगे इसी नदी के किनारे पर लगा। किनारे पर लगतेही पाजी देवों ने हमारा पीछा किया। टौंक तो पकड़ा

गया परन्तु मैं उनसे पीछा छुड़ाके भागा और गिरता पड़ता किसी तरह इस बाग में आ पहुँचा। मैं बहुत देर से यहाँ सो रहा था इसलिये तुम्हारी बन्दूकों की आवाज़ें नहीं सुनी।

हेक्टर—अच्छा अब क्या करना चाहिये ?

सर विल्फ्रेड—हमें पहिले तो अपने साथियों को छुड़ाना चाहिये। फिर दूसरे, उस अंग्रेज का, जो यहाँ कैदी है समाचार लेना चाहिये और तीसरे इन कामों के उपरान्त यहां से कुशल पूर्वक निकलना चाहिये। परन्तु सब से पहिले इस मकान की देख भाल करनी होगी क्योंकि प्रातः कालही से जङ्गली लोग बड़ी खोज हम लोगों की करेंगे, इस लिये कोई छिपने का स्थान हम लोगों को अवश्य ढूंढ़ना चाहिये।

हेक्टर—अच्छी बात है, यह राईफल ( बड़ी बन्दूक ) तो आप लिजिये मैं मसकेट ( एक छोटी बन्दूक ) से काम लूंगा।

सर विल्फ्रेड ने हेक्टर के बहुत कुछ कहने सुनने के उपरान्त राईफल ले ली और हेक्टर को चुपचाप अपने पीछे आने को सहेज कर आगे बढ़े। कितनेही मकान वे अपने पीछे छोड़ते, बढ़ते जाते थे।

सर विल्फ्रेड—यह नगर तो हमारी जान रोम राज्य अन्तर्गत में था करण यह कि बहुत से मकान उसी तरह के हैं तुमने इङ्गलेन्ड में—हे भगवान यह क्या? मुझे कदाच् एक क्षण के निमित्त सितारे दिखाई पड़े—"

अभी यह इह इतना कही चुके थे कि इनका सिर किसी कड़ी वस्तु से टकराया।

हेक्टर—क्या है? क्या अब बढ़ना कठिन है?

सर विल्फ्रेड—तनिक मैं देखलूं कि यह क्या है। इस अन्धकार में भला क्या खाक दिखलाई देगा; मैं सलाई भी तो नहीं जला सक्ता—आह! यह तो किसी फाटक के दरवाजे के छड़ हैं—अच्छा ठहरो!

इधर उधर हाथ फैलाने पर जान पड़ा कि यह एक फाटक है जिस्में चार २ इञ्च की दूरी पर छड़ लगे हुये हैं। एक २ खिड़की दोनों पल्लों में लगी थी! और देखने पर यह भी विदित हुआ कि इनमें से एक खुली भी थी!

सर विल्फ्रेड—(उस खिड़की को खोल कर) अहाहा यहं रास्ता है ले चले आओ!

इस्के उपरान्त दोनों मनुष्य एक के उपरान्त दूसरे ने भीतर प्रवेश किया।

हेक्टर—यह लोहे के छड़ इस्में क्यों लगे हुये हैं?

सर विल्फ्रेड—जान पड़ता है कि पहले यह स्थान बन्दीगृह था।

कुछही दूर जाकर दोनों ठिठक गये। एक बिचित्र प्रकार की दुर्गन्धि वहाँ उठ रही थी। सर विल्फ्रेड ने धीरे २ कहना प्रारम्भ किया "हेक्टर! मैं नहीं कह सक्ता कि यहाँ क्या है

परन्तु ऐसा स्मरण होता है कि इस्से पाहिले भी कभी ऐसी दुर्गन्धि मैंने सूंघी थी।"

हेक्टर—और मैंने भी!

सर विल्फ्रेड—देखो मैं बतलाऊं! लन्दन के चिड़ियाघर में सिंघ के कठहरों में से ऐसीही दुर्गन्धि आती थी! क्यों है कि नहीं?

हेक्टर—(काँप कर) हाँ हाँ! तब"

अब इन लोगों के पैर आगे न उठते थे, चुपचाप दोनों साँस रोके वहीं खड़े थे। थोड़ीही देर के उपरान्त किसी के गुर्राने की आवाज सुनाई दी। हेक्टर यह सुनकर भागने ही को था परन्तु सर विल्फ्रेड ने तुरन्त पकड़ लिया।

सर विल्फ्रेड—सावधान! भागना मत! यदि अपने स्थान से हिलोगे तो बुरी मृत्यु से मारे जाओगे।

इस्के उपरान्त एक भयानक गरज सुनाई दी जिसे सुन के दोनोंहीं का रक्त सूख गया।

सर विल्फ्रेड—तुरन्त दियासलाई निकालो!

हेक्टर के पास केवल दो दिया सलाईयाँ थीं जिस्में से इसने एक जलाई! जब प्रकाश चारों ओर हो गया तो क्या देखते हैं कि जहाँ लों प्रकाश फैलता है उस्में ६ बड़े २ सिंघ इधर उधर घूमते दिखलाई पड़ते हैं। भागने की अब कोई राह न थी। दियासलाई भी अब बुझनेही को थी। और यह निश्चयही था कि अँधेरा होतेही वे सिंघ इनके टुकड़े उड़ा देंगे।

सर विल्फ्रेड—कितनी बड़ी चूक हुई है ।

हेक्टर—गोली मारदीजिये वह देखिये एक इधरही आ रहा है ।

सर विल्फ्रेड—नहीं तुम दियासलाई बालो, और उसे अपने प्राण बचाने के लिये जलाये रहो, तब सेमैं एक दूसरी तदबीर रता हूं ।

यह कहके सर विल्फ्रेड ने अपनी कमीज (कुरता) फाड़ डाली और जल्दी से ब्रांडी निकालकर उस कपड़े को उस्में तर कर लिया । दियासलाई अब बुझनेही पर थी कि सर विल्फ्रेड ने इस मसाल में आग लगा दी । इस्के जलतेही उन्होंने प्रकाश में और बहुत से सिंह देखे ! इतने में सर विल्फ्रेड की दृष्टि एक पिंजरे पर पड़ी, जिस्का द्वार खुला हुवा था; और वे मशाल घुमाते उसी ओर चले । मशाल की चिनगियों से सिंघ लोग हट गये परन्तु तो भी धंसे आते थे । इसी तरह ये लोग पिंजरे के दरवाजे पर पहुँचे, सिंह भी अब इनके बहुतही निकट आ गये थे परन्तु उनकी एक मशाल के घुमावति फिर सब को पीछे हटा दिया ।

सर विल्फ्रेड चाहते थे कि पिंजड़े में घुसजावें ! पर हाय ! यह क्या अनर्थ हुवा! उन लोगों ने उधर देखा तो पिंजड़े के भीतर भी एक सिंह को बैठे पाया जो अपने शिकारों के आने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

## इकतीसवाँ बयान ।

यह समय वास्तव से बड़ाही कठिन था । और यही अव-सर सर विल्फ्रेड की बुद्धिमानी और बीरता की परीक्षा का भी कहा जा सक्ता है ।

पाठकगण विचारें ! कि एक दर्जन अर्थात् १२ भयानक पशु; और भयानक पशु भी कौन,—सिंह, तो इन्हें बाहर से घेरे हुये हैं, और वह स्थान कि जिस्के भीतर जाने से इनकी प्राण रक्षा होती है इनसे केवल ६ कदम पर है । परन्तु उस समय इनकी क्या अवस्था हुई होगी कि जब इनपर यह विदित हुवा होगा कि जिस स्थान पर उनके प्राण बचने को थे वह भी एक भयानक सिंह से जो इन्हें टुकड़े २ करने को बैठा है रुँधा हुवा है ।

परन्तु बाहरे तेरा जिगरा ! सर विल्फ्रेड के साहस ने इस समय भी उनका साथ न छोड़ा । उन्हों ने मशाल तो हेक्टर के हाथ में थँभा दी कि वह इस्से बाहरवाले सिंहों को डेराता रहे और स्वयं बन्दूक हाथ में लेकर पिंजड़ेवाले सिंह का टीका (माथा) ताका और एक के उपरान्त दूसरी तीन फायेर कीं ! हे भगवान ! उस समय उस्के तड़पने तथा गरजने का क्या पूछना था ! साफ यह मालूम होता था कि इसने अब पिंजड़े को तोड़ा और अब तोड़ा । बाहरवाले सिंह भी खूब गरजे और सब एकत्रित होकर इनपर टूटनेही को थे कि सर विल्फ्रेड ने

हेक्टर को पिंजड़े के भीतर खींच लिया और साथही एक वार गोली का इन शेरों पर भी किया जिस्से वे लोग कुछ पीछे हट गये, और तब इन्होंने पिंजड़े का द्वार तुरन्त दृढ़ता से बन्द कर लिया।

मशाल बुझ गई। ये लोग भय से पिंजरे के बीच में बैठ रहे। सिंहों का क्रोध इस समय उबला पड़ता था। यद्यपि उस अन्धकार में इन्हें एक सिंह भी नहीं दिखाई देता था पर तौ भी उनकी चमकती आँखें उनके स्थान का पता दे रही थीं। तीन सिंहों ने एक बारगी धक्का दिया जिस्से वह पिंजड़ा हिल गया। और उलटते २ बच गया। तीसरी बार बहुत से सिंहों ने मिलके धक्का दिया जिस्से वह पिंजड़ा सचमुच उलटही गया और निकट था कि सिंह अपना पंजा डालकर किसी की बाँह चबा जावें कि सहसा किसी बड़े फाटक के खुलने का भन्नाटा सुनाई दिया और लगभग १२ देवों वे हाथों में मशाल उठाये भीतर आते दिखलाई दिये। इनलोगों को देखकर सर विल्फ्रेड कहने लगे "हेक्टर! मुझे इन बैरियों को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, सम्भव है कि हमलोग बड़ीही दुर्गति से मारे जावें, परन्तु इस्से तो वह अच्छी होगी"।

उन देवों ने आतेही पिंजरे को घेर लिया और फिर सब मिलकर उसे खींचते हुये बाहर ले चले और फाटक फिर पहलेही की भाँति बन्द हो गया।

जब सर विल्फ्रेड बाहर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि दिन चढ़ आया था और एक बड़ा झुण्ड देवों का बाहर खड़ा था जो इन्हें देखतेही बड़ाही कोलाहल मचाने लगा।

इनके खींचनेवाले इन्हें खींचते हुये लाकर एक सुन्दर कोठरी के द्वार पर ठहरे, और तब इन्हें पिंजरे से निकलने को इशारा किया। जब ये लोग पिंजरे के बाहर निकल आये तो इनसे हथियार माँगे गये जिसे दोनें ने बे कुछ कहे सुने दे दिया।

अब इनको लेकर वे लोग एक दूसरी ओर चले और कुछही दूर पहुँचकर इनलोगों को एक चहारदीवारी मिली जिस्के भीतर पहुँचने पर इनलोगों ने देखा कि यहाँ भी एक बहुत बड़ा लौहे का पिंजड़ा रक्खा हुवा है और उसी में फिलिप कप्तान और टौंक बन्द हैं।

## बत्तीसवाँ बयान।

पिंजरे का द्वार खोला गया और हेक्टर तथा सर विल्फ्रेड भी उसी में डाल दिये गये। यह कौन नहीं जानता, कि इनलोगों की भी स्वतन्वता अब हवा हो गई, और यह दोनों भी कैदी बनाये गये। परन्तु उस समय का कैदी बनना स्वतन्वता के आल्हाद से कहीं विशेष था। कप्तान जोली ने जिन्होंने अपने सच्चे मित्र को बिलकुल मुरदा समझ लिया था सर विल्फ्रेड को

देखतेही गोद में उठा लिया और उछल पड़े ! आँखों से आँसू भी निकलते जाते थे । इस्के परान्त सर विल्फ्रेड जब निश्चिन्तताता से बैठे तो उन्होंने सब अपनी बीती कह सुनाई । जिसे सुनके सब बड़े आश्चर्य में आये । बेचारा टैंक जिसने अबतक किसी से बातही न की थी क्योंकि उस्की बात का कोई समझनेवाला-ही न था, अब सर विल्फ्रेड को पाके बड़ा प्रसन्न हुवा और उसने उन देवों के आगे की भी इच्छा कुछ बताई जिसे सर विल्फ्रेड ने तर्जुमा करके अपने मित्रों को सुना दिया और उसे सुन्तेही सब बड़ेही दुखी हुये ।

कप्तान—अरे यार, विल्फ्रेड ! और तो जो कुछ है वह हैही, परन्तु ये राक्षस किसी को भोजन इत्यादि का दुःख नहीं देते । कैसे अच्छे भोजन इन्होंने खिलाये हैं कि वाह जी वाह: सब पुष्ट चीजें ! एक से एक उत्तम !

सर विल्फ्रेड—पुष्ट के भरोसे न रहियेगा आपही पर इनलोगों के दाँत हैं, भला हमलोगों को तो मोटे होते २ कुछ दिन चाहियें परन्तु आप तो बहुतही शीघ्र उनके इच्छानुसार मोटे हो जावेंगे और फिर—"

कप्तान—(काँपकर) ऐं ! क्या कहा ? अजी मतलब यह कि तुम्हारा मतलब क्या है इस बात से ?

सर विल्फ्रेड—जी हमारा मतलब ये है कि आप के कबाब बड़े अच्छे होंगे ।

कप्तान—(जोर से) अरे ! यह बात है ! हाय रे ! हैं ! हाय रे ! अब मैं क्या करूं, मैंने वह सब खाया क्यों ! उफ्फोह बड़े बुरे फंसे ! एक तदबीर ; बस एक तदबीर है। मैं अब कै किये देता हूं। बस यही ठीक है। मेरी हड्डियाही गले जो फिर ऐसे खाने को हाथ भी लगाया हो। तनिक सर विल्फ्रेड इस्तरफ तो आ जाओ ! अजी इधर २ मैं वहाँ कै करूंगा—

सर विल्फ्रेड—परन्तु अब जाइये कै करने की ऐसी आवश्यक्ता नहीं है जो होना था सो हो गया, हाँ आगे के लिये ध्यान रखियेगा और असल बात तो ये है कि मुझे यह शोशा छोड़ के तुम्हारी दो घड़ी की दिल्लगी देखनी थी।

कप्तान—जी अब मैं किसी एक की तो सुनूंगा नहीं। यह जबही टौंक ने केवल चावलही खाये थे, पुष्ट चीजों को छूवा तक नहीं।

इस्के उपरान्त भोजन आया और सब ने केवल फल तो खा लिये परन्तु और सामग्री जैसे; नारियल, शराब शहद और माँस इत्यादि को हाथ से भी न छूवा, यह देख वे जङ्गली बहुतही व्यग्र हुये।

दिन में बहुत से झुण्ड देवों तथा देवनियों के इन कैदियों को देखने के लिये आये। उन देवनियों को देख के कप्तान साहब को डहोमी स्त्रियाँ याद आ गईं। वास्तव में वह मर्दों को भी भय दिलानेवालीं स्त्रियां बड़ीही भयानक थीं इन में से कोइ भी सात फीट से तो कम लम्बाई की थी ही नहीं।

दोपहर ढल चुका है। तो भी बारह के उपरान्त अभी एक न बजे होंगे कि सहसा हमनलोगों के पिंजड़े से कुछ दूर एक भयानक कोलाहल होता सुन पड़नेलगा, और फिर इस्के उपरान्तही एक देवों का झुण्ड आता दिखलाई दिया जिस्के आगे २ एक देवनी बड़ीही बिकलता से विलाप करती पिंजड़े की ओर बढ़ती दिखलाई दी। ये लोग आके पिंजरे के निकट ठहरे। और बहुत देर तक उस ओरत तथा उन देवों में लड़ाई तकरार होती रही। इस्से प्रतीत होता हुवा था कि वह स्त्री जो कुछ कहती थी वह उन देवों को स्वीकृत न था; कि सहसा वह स्त्री पिंजरे के ओर निकट आई और कप्तान जोली की नाक पकड़ ली !

कप्तान साहब का तो उस्की इस्बात पर रक्तही सूख गया और जोर से चिल्ला उठे "छोड़, तेरा सत्यानास होये ! उफ कितनी जोर से नाक पकड़ी है, इसे हटाओ यहाँ से—"।

अस्तु इनकी तो वह सुन चुकी परन्तु अब उस देवों के झुण्ड ने बड़ाही कोलाहल मचाना प्रारम्भ किया। परन्तु वह स्त्री अपनीही कहे जाती थी। अन्त उनमें से एक लम्बा देव आगे बढ़ा फिलिप की ओर इङ्गित करके कुछ उस्से कहा, परन्तु स्त्री ने अपनी गरदन हिला दी। जिस्पर उस देव ने कुछ क्रोध से कहा, परन्तु उसके मुंह से क्रोध युक्त शब्द निकलतेही स्त्री ने तड़ से उस्के गाल पर एक तमाँचा

सही किया। जिसे खाकर और गाल सुहलाता फिर वह अपने झुण्ड में जा मिला और उस स्त्री ने पिंजरा खोलकर तुरन्त कप्तान साहब को निकाल लिया।

कप्तान साहब का तड़पना फड़कना उस समय बिलकुल बेकाम हुवा, उस औरत ने इन्हें अपने कन्धे पर डाल लिया और आगे चली। कप्तान साहब सहायता के लिये गला फाड़ने लगे और सर विल्फ्रेड उठे भी परन्तु इन्हें एक जङ्गली ने फिर पिंजड़े में ढकेल दिया और उस्का द्वार बन्द कर दिया।

सर विल्फ्रेड—(चिल्ला के) मित्र ईश्वर पर भरोसा रक्खो; आशा से मुंह मत मोड़ना उसमें बहुत कुछ सामर्थ है।

वह स्त्री अन्त कप्तान साहब को लेही गई और वह हबशियों का झुण्ड आखिर लाल पीला होता और अपना सा मुंह लिये एक ओर को चला गया।

कप्तान साहब के जाने के उपरान्त ये लोग बहुतही उदास हो गये।

सर विल्फ्रेड—ईश्वर जोली को बचाये, यद्यपि उसके बचने की आशा तो बहुत कम है परन्तु न जाने क्यों मेरे चित्त में आप से आप यही बात उठती है कि वह बच जायगा। देखिये आगे किस के सिर पर—"

अभी यह बात उनकी समाप्त भी न होने पाई थी कि दो देव पिंजड़े के निकट आये और द्वार खोल कर सर विल्फ्रेड

का दोनों हाथ पकड़ कर उठाया और बाहर निकालकर खींचते हुये एक ओर ले चला।

## बत्तीसवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड को जाता देखकर सब रोने लगे। सब को यह निश्चय होगया कि राक्षस इन्हें मारकर खाने के लिये ले जा रहे हैं, और आजन्म अब इनके साक्षात् की आशा नहीं! हमारे सर विल्फ्रेड, कुछ अपने मित्रों को सम्बोध दिलाते, दिलही दिल पछताते, परन्तु दृढ़ता से पैर उठाते, उन हबशियों के साथ हो लिये।

वे हबशी इस चहारदीवारी से निकलकर जिस में कि पिंजड़ा रक्खा था, बहुत से द्वारों में घुसते और दाहिने बाँयें मुड़ते एक सीढ़ी के निकट आ खड़े हुये। यहाँ से फिर वे लोग ऊपर चढ़के एक लम्बी चौड़ी दालान में आये जिस्में बहुत से जङ्गली एकत्रित थे। दालान से भी होकर ये लोग आगे बढ़े और अब सीढ़ियों से होते हुये एक बड़े कमरे में पहुँचे, जिस्के सामनेही किसी दरवाजे पर एक खूबसूरत परदा पड़ा हिल रहा था। सर विल्फ्रेड के लानेवाले इसी दरवाजे के पास आके और अपनें हथियारों को एकबार खड़खड़ा के खड़े हो गये। इनके खड़े होतेही तुरन्त दो हथियारबन्द हबशी भीतर से निकले और सर विल्फ्रेड को लेकर फिर भीतर लौट गये।

भीतर पहुँचकर सर विल्फ्रेड ने देखा कि वे बाहर से छोटे परन्तु एक प्रकार के बड़े कमरे में थे। जिस्की खिड़कियाँ मैदान की ओर खुली थीं। कोठरी में और सामान्य वस्तुओं के अतिरिक्त, दो पलङ्ग बिछे हुये थे जिस्में से एक पर तो एक देव मुंह हाथ लपेटे पड़ा था और दूसरे पलङ्ग का बैठने वाला सर विल्फ्रेड को देखतेही उठा और कई कदम इनकी ओर बढ़ा।

सर विल्फ्रेड यह देखकर दङ्ग हो गये कि वह व्यक्ति जो इनकी ओर बढ़ रहा था एक अंग्रेज़ था, जिस्की उम्र लगभग ५० बर्ष के होगी। इस अंग्रेजी व्यक्ति की कमर सोच और दुःख से कुछ झुक भी गई थी। इस्के चेहरे पर झुर्रियाँ भी पड़ चली थीं। इसने बढ़कर सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ लिया और बड़ेही तपाक से उनसे मिला।

सर विल्फ्रेड — मैं अनुमान करता हूं कि राल्फ हालडन नामी एसिपाहि (भ्रमण करनेवाले) आपही हैं?

वह — हाँ वह अभागा मनुष्य मैंही हूं। परन्तु आप कौन हैं! मुझे आश्चर्य है कि आप यहाँ क्यों आये?

सर विल्फ्रेड — मेरा नाम सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री है कदाच् आपने— सुना होगा — परन्तु यह क्या — हाँ"

राल्फ ने जैसेही सर विल्फ्रेड का नाम सुना वैसेही उनका चेहरा पीला हो गया बदन कांपने लगा नेत्र पथरा से गये, सहसा इसी अवस्था में वे पीछे गिरनेही को थे, परन्तु सर विल्फ्रेड ने तुरन्त आगे बढ़के उन्हें सँभाल लिया। सर

विल्फ्रेड की सहायता के निमित्त वे दोनों हब्शी जो गारद के भाँति वहाँ पर नियुक्त थे बढ़े, परन्तु सर विल्फ्रेड ने इशारे से उन्हें रोक दिया और फिर वे अपने स्थान पर जा खड़े हुये। इस्के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने जेब से ब्राण्डी की बोतल निकाली और कुछ बून्दें उस्की तुरन्त बेहोश आदमी के मुंह में डाल दीं जिस्से कुछही देर उपरान्त उन्हें होश आ गया।

राल्फ आपके नाम से कोई विशेष बात मेरे चित्त पर नहीं हुई, बरन् इस अचाञ्चक की प्रसन्नता ने मेरे हृदय पर एक कड़ी ठोकर पहुँचाई कि आज बीस बर्ष के उपरान्त मुझे एक अपने देशवाले की सूरत तो दिखलाई दी है। अच्छा अब जिस बात के निमित्त आप बुलाये गये हैं उसे सुनिये और देखिये (ठंढी साँस खींचकर) हाय! देखिये इस्का परिणाम क्या होता है।

सर विल्फ्रेड अच्छा मुझ से स्पष्ट रूप से कहिये कि मैं किस निमित्त बुलाया गया हूं।

यह सुनकर राल्फ हाल्डेन सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ कर दूसरे कोच (चारपाई) के निकट ले गये इसी के निकट दोनों बैठे और फिर राल्फ ने ऐसे कहना प्रारम्भ किया।

राल्फ—इस कोच पर का पड़ा हवा मनुष्य इस भयानक नगर का अधिपति शाह मेंगो है। यह जङ्गली हर एक बस्तु की विशेषता के कारण इस अवस्था को पहुँच गया है, और अब इस्के मृत्यु में कुछही कसर बाकी है। संसार की कोई दवा अब इसे आरोग्य नहीं कर सक्ती, परन्तु इस्के पहिले कि मैं आपसे

और कुछ कहूं, मैं अपना वृत्तान्त भी आप से कह सुनाना अच्छा समझता हूं। परन्तु हाँ मेरी बातों को सुनती समय आप इशारा साह मेंगो की ओर करते जाइयेगा और सुनने के समय ऐसा आकार रखियेगा मानो आप रोगी के बारे में कोई बात सुन रहे हैं—

तब, आप पर यह तो भली प्रकार विदित होगा कि मैं मरक्युरी नामी गुब्बारे में सवार होकर इधर आया था यह गुब्बारा नदी नाइजर के निकट एक अरब की गोली से बरबाद हो गया। मैं अपने साथी सहित गुब्बारे से नदी में जारहा, वह तो डूब गया परन्तु मैं वहाँ से किसी तरह प्राण बचाकर किनारे पर आतेही दुष्ट अरबों के हाथ में पड़गया जो मुझे बोरन ले गये, और फिर वहाँ से लाके शेड झील के निकट के रहनेवालों के हाथ बेच दिया। मैं सात बर्ष पर्यन्त उन लोगों के साथ रहा। इस जाति का नाम बुदमा था। कुछ दिनों के उपरान्त उस बुद्दमा जाति और वहीं की एक और निकट रहनेवाली जाति के साथ लड़ाई हुई जिस्में मैं पकड़ लिया गया। उस जाति का नाम ; जिस्में कि मैं पकड़ लिया गया, तोरिगा था। छः बर्ष पर्यन्त उन लोगों में मैंने अनेक दुःख सहन किये हाँ इस्के उपरान्त एकदिन मेरे फूटे भाग्यों ने पलटा खाया। तोरिगा जाति का राजा किसी रोग से पीड़ित हुवा और मैंने उस्की दवा करनी प्रारम्भ की। भाग्य की बात! राजा ने कुछही दिनों के उपरान्त आरोग्यता लाभ करी। फिर तो मेरी चाँदी थी ऐसे आनन्द से

कटने लगी कि जिस्का मुझे कभी स्वप्न में भी ध्यान न हुआ था। इसी तरह मुझे उस जाति में रहते आठवाँ बर्ष बीता। यह तो खुली बात है कि सुख की घड़ी बहुतही शीघ्र व्यतीत होती है अभी मैंने वहाँ कुल दोही बर्ष आनन्द से काटे होंगे कि इन देवों से और तोरिगा जातिवालों से समर की ठहर गई! खूब मार काट हुई! अन्त यही देव जीते और जीत के साथही साथ मुझे भी पकड़ के यहाँ ले आये। यहाँ आने पर सुना कि यहाँ का भी राजा बीमार है तुरन्त एक बात चित्त में आई, सोचा कि औषधी करो, यदि राजा आरोग्य हो गया तो बेमौत मारे जाने से तो बचेंगे, यही सोच के दवा प्रारम्भ की थी। दवा ने असर भी किया था राजा बहुत कुछ अच्छे भी हो गये थे परन्तु इन राक्षसों से परहेज कब किया जाता है, माँस इत्यादि का भक्षण जो बुरी तरह से प्रारम्भ किया तो रोग फिर बढ़ गया और इसे इस अवस्था को पहुँचा दिया। अब कोई आशा जीवन की नहीं पाई जाती! इस जाति के हकीम और जादूगिरों ने भी उत्तर दे दिया है। मुझे अब केवल ३ दिन का अवकाश मिला है यदि इस्में राजा को अच्छा कर लिया तो ठीक! नहीं तो बुरी मृत्यु से मारे जांयगे।

सर विलफ्रेड—परन्तु यह तीन रोज की कैद कैसी लगाई है इस्के क्या अर्थ हुये?

राल्फ—इस जाति के जादूगिरों ने भविष्यवानी की थी कि बादशाह फलानी तारीख को मर जायगा और वह तारी

परसों है। यदि इस तारीख पर्यन्त अच्छा हुवा तो तो कुछ नहीं, नहीं तो ईश्वर मालिक है।

सर विल्फ्रेड—परन्तु अब क्या हो सक्ता है ? तीनदिन तो नहीं तीन बर्ष का भी समय मिले तो बादशाह नहीं बच सक्ता ! हमारी जान तो यह केवल २४ घण्टों का मेहमान है। इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने अपनी रामकहानी छेड़ी, मुसीबतें औ उनसे प्राण बचाकर यहाँ लों आनेका सब वृत्तान्त कह सुनाया हाँ हेक्टर का हाल इन्होंने कुछ सोचकर छिपा रक्खा क्योंकि अभी २ वे उस चोट से सचेत हो चुके थे जो राल्फ हाल्डे-न को, इनके देखने के कारण (या किसी प्रकार) लगी थी। फिर भला वह कैसे सहसा कह सक्ते थे कि उनका लाल उनसे इतना निकट आ गया है।

बातचीत सब अन्त को पहुँची। अब सर विल्फ्रेड राल्फ हाल्डेन अपने और अपने साथियों के छुटकारे के बारे में सो-चने लगे और बड़ी देर लों वह स्वतन्त्रता की राहों पर ध्यानही ध्यान में घूमते रहे।

---

## तेंतीसवाँ बयान।

हाल्डेन – सर विल्फ्रेड ! शाही गार्ड, यह जो दोनों इस कोठरी में खड़े हैं शुबहा कर रहे हैं। कहिये मैं आपकी ओर से उन्हे क्या उत्तर दूं ? क्या मैं साफ़ २ वही उनके सामने दोहरा जा-ऊं जो अभी २ आप मुझसे कह चुके हैं और इसतरह अब

आगे के जीवन से एकदम निरास हो जावें ? और फिर मर्द एक बात तो है कि हमलोग नित्य २ के भय से तो छुटकारा पा जांयगे।

सर विल्फ्रेड—(कड़ाई से) नहीं; उन से कहो कि अभी हमारे फैसले का अन्त नहीं हुवा और उस्के अन्त होने के लिये थोड़ा अवकाश और मिलना चाहिये।

यह सुनकर हाल्डेन ने दोनों हबशियों को सर विल्फ्रेड की बात से सचेत करदिया जिसे उन्होंने प्रसन्नता से सुन लिया और तब फिर राल्फ सर विल्फ्रेड से आगे की तदबीरों के बारे में पूछते हुये उनके निकट आ बैठे।

सर विल्फ्रेड—सुनिये महाशय, इस्के पहिले कि मैं कुल आशाओं को छोड़कर अपने को मृत्यु के भयानक पंजे में सौंप दूं यह मैं जाना चाहता हूं कि इस मकान की जिस्में कि हम इस समय बैठे हैं किस प्रकार की बनावट है।

हेल्डेन—यह मकान चौखूटा बना हुवा है। इस्के बीचों बीच एक बड़ा * मदौवर कमरा है जिस्को आपने अभी देखाही है। इस बड़े कमरे के चारों कोनों पर चार कोठरियाँ बनी हुई हैं औ इन्हीं एक कोठरी से दूसरी कोठरी पर्यन्त चारों ओर बरामदे भी बने हुये हैं। अच्छा तो उन चारों कोठरियों में जो सीढ़ियाँ बनी हुई हैं वह चार भिन्न २ सड़कों पर

* मदौवर अर्थात् वह कमरा जिसके चारों ओर कोठरियाँ या बरामदा घूमा हो और वह बीच में हो।

जाके निकलती हैं और जिनपर हर वक्त मनुष्यों के खानेवालों की एक भीड़ एकत्रित रहती है। और मैं जहां तक अनुमान करता हूं और यहाँ के पत्थरों पर की लिखावट से पाता हूं वह यह है, कि यह महल उन बादशाहों का है जिन्होंने इसे कुछ सौ वर्ष पूर्व बनाया था और यहाँ शासन करते थे पर यह नहीं कह सक्ता कि कैसे इस्पर इन राक्षसों का अधिकार हो गया।

सर विल्फ्रेड—परन्तु इस महल का कोई गुप्त पथ भी तो है।

हेल्डेन—ठीक है, जिस्से आप ने इस्में प्रवेश किया था और जो महल के पिछवाड़े बाग के सामने की दीवार में है। इस्से यदि कोई महल से जाया चाहे तो सिंहों के रहने का स्थान छोड़ कर फिर श्रोता मिलेगा और फिर वह राह सीधे उसे नदी तक पहुंचा देगी। और यह राह उन सड़कों से बिलकुल नहीं मिलती जो कोठरी से उतर कर मिलती है।

सर विल्फ्रेड—अच्छा तो इस्के नीचे जाने अर्थात् महल के नीचे पहुँचने की राह उन कोठरियों के सिवा और कहीं से नही है!

हेल्डेन—ऐसा नहीं, दो राह और हैं यद्यपि यथार्थ में एकही राह ठीक कही जा सक्ती है। मेरा तात्पर्य्य प्रथम तो इन दोनों खिड़कियों से है जिन से कूद कर मनुष्य ५० फीट की ऊँचाई से नीचे राक्षसों के बीच जा सक्ता है, परन्तु इस परिश्रम से कोई फल नहीं, इसी लिये मैंने इस राह की गिनती नहीं की।

सर विल्फ्रेड—और दूसरी राह कौन है?

इस्पर हेल्डेन ने बे परवाही से कहा "उसे भी मैं कहता हूं। क्या आप उस द्वार को देखते हैं जो आप से कुछ अन्तर पर दाहिने ओर की दीवार में बना है यह एक छोटी सी कोठरी का द्वार है जिस्में बादशाह की विशेष वस्तु रक्खी हुई हैं, और यह विशेष वस्तु कुछ लूट का माल है जिसे उसने अन्य जातिओं से पाया है। हाँ तो इस छोटी कोठरी की छत के बीचों बीच एक खिड़की की भांति पत्थर है जो हटाया जा सक्ता है। शेर का कमरा ठीक उसी कोठरी के नीचे है न जाने कितने बेचारे उसी छेद से गिराये जाकर भूखे शेरों का भोजन बन गये!

सर विल्फ्रेड—भला शाह लागोस की लूट की वस्तुओं में से कोई काम लायक भी है।

राल्फ—एक भी नहीं सब रद्दी! और उस्में हैही क्या; कुछ टूटे झंडे, थोड़ी सी टूटी बन्दूकों की नलें और कोट, कुछ अंगरेजी सिपाहियों की फटी पुरानी वर्दियाँ और एक टूटा हुआ बोतलों का सन्दूक, बोतलों सहित है।

यह सुन्तेही सर विल्फ्रेड चौंक पड़े और एक बेर स्थिर दृष्टि से कोठरी की ओर देखा और फिर राल्फ हाल्डेन से पूछने लगे।

सर विल्फ्रेड—हाल्डेन ( कुछ ठहर कर ) भला तुम यह भी कुछ कह सक्ते हो कि हमारी छिनी हुई बन्दूकों का क्या परिणाम हुआ।

हाल्डेन—उस्में से दो तो—"

यह कह कर उन्होंने बहुत धीरे से उन दोनों शाहीगाडीं की ओर आँख घुमाई जिस्का तात्पर्य यह था कि दो बन्दूक इनके पास हैं और इसके उपरान्त फिर उन्होंने कहना प्रारम्भ किया "परन्तु यह मैं नहीं जानता कि वे इसका व्यवहार भी जानते हैं या नहीं।

सर विल्फ्रेड—बिलकुल नहीं, वे इसका व्यवहार बिलकुल नहीं जानते, क्योंकि यदि वे इसका व्यवहार जानते तो कारतूस हमारे पास फिर भला काहे को छोड़ देते अच्छा तो अब सुनो हाल्डेन ( इसके उपरान्त वह बहुत ही धीरे २ बात करने लगे ) यह तो तुमपर प्रगटही है और प्रगट कैसा इसका निश्चय ही है कि हम लोग इस समय अनेक प्रकार की आपत्तियों में घिरे हुये हैं और उनमें से निकलने की राह बिलकुल बन्द दिखलाई पड़ती है। परन्तु इसके साथही साथ हमको अपने और अपने साथियों का ध्यान रख के अन्तिम दम तक पूरा २ उद्योग छुटकारे के निमित्त करना होगा। हमने अपने चित्त में भागने का एक अच्छा मैदान बाँधा है परन्तु उसके लम्बे बिस्तार में दो एक ऐसी बातें आ पड़ती हैं कि जिस में वह पूरा नहीं पड़ता। परन्तु उन बातों या कठिनाइयों में और तो पीछे देखा जायगा सबसे आवश्यकीय बात तो अभी हमारे सामने आ पड़ी है और जिस्से छुटकारा केवल आप की थोड़ी सहायता से हो

सक्ता है, और वह यह कि तुम इतनी बात इन दोनों खड़े हुये शाही गार्डों से कहो कि मैं और मेरे साथी वास्तव में एक बड़े भारी वैद्य हैं परन्तु हम लोगों का बल कुछ उसी समय अच्छी तरह दिखाई देता है जब हम सब एक स्थान पर एकत्रित होते हैं; अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सक्ता। इस लिये हम लोगों को वे इस सामने वाली कोठरी में तीन दिवस पर्यन्त बन्द रक्खें जिस्के उपरान्त उनका बादशाह अवश्य बच जायगा और नहीं तो वह मृत्यु के मुंह में तो हैही। बस प्यारे हाल्डेन इसी बात को भली भांति उन्हें समझा दो। और मैं जहांलों अनुमान करता हूं वे भी इसबात से मुंह न मोड़ेंगे।

हाल्डेन—मैं भी ऐसाही अनुमान करता हूं परन्तु आपके साथियों में कप्तान जोली आपका साथ नहीं दे सक्ता क्योंकि वह अब, इस जाति की एक जबरदस्त स्त्री के हाथ पड़ गया है और इस देश की यह रीति है कि जिस स्त्री के पति को कोई व्यक्ति मारता है तो वह स्त्री फिर उसी मारनेवाले के गले का हार होती है। कप्तान ने कदाच् उस्के पति को मारा होगा इसलिये उन्हे वह अपना पति बना के रक्खे होगी और अब स्वयं इस देश के शासनकर्ता भी उस्का कुछ नहीं कर सक्ते।

यह सुनकर सर विल्फ्रेड देखने में तो चुप हो गये परन्तु दिलही दिल कहने लगे कि चाहे कुछ क्यों न हो, और चाहे

कैसेही आपत्तियों से सामना क्यों न करना पड़े परन्तु मैं अवश्य कप्तान को इस विचित्र रुकावट से छुटकारा दिलाऊंगा।

हाल्डेन—परन्तु हाँ! कुछ राहें ऐसी भी हैं कि जिस्से वे बच सक्ते हैं। अस्तु! वह तो समय पर देखा जायगा इस्समय एक आवश्यकीय बात यह है कि जिस प्रकार हो आपके साथियों को यहाँ लाना चाहिये कारण यह कि शाह लागोस के भयानक रूप से पीड़ित रहने के कारण यहाँ की राक्षस प्रजा निशङ्क हो गई है दुष्टों ने अन्धेर सा मचा रक्खा है इश्वर जाने कौन राक्षस और कब आकर आपके साथियों में से किसी को उठा ले जाय (देखकर) परन्तु अब ये शाही गार्ड के दोनों जवान उकताये हुये से जान पड़ते हैं अब मैं इनसे जाकर आपकी बातें कहता हूं।

यह कहकर राल्फ हाल्डेन उठे और उन हबशियों से जाकर उपरोक्त बातें कहनी प्रारम्भ कीं। हमारे सर विल्फ्रेड तब से बड़ीही उत्सुकता से उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछही क्षणों के उपरान्त राल्फ हाल्डेन उनलोगों से वे बातें कहकर लौटे और उन्हों ने सर विल्फ्रेड को हबशियों का यह उत्तर सुनाया।

हाल्डेन—वे लोग इसबात को अपने भविष्य स्वामी से कहा चाहते हैं और तबसे आप को उसी कैद में रहना होगा। परन्तु प्यारे सर विल्फ्रेड भय मत करो मर्दों का सा साहस करो। सब बातें हमलोगों के इच्छानुसारही होंगी।

अब उत्तर देने का समय कहाँ था राल्फ के यह कहते २ दोनों सिपाही आगे बढ़े और जल्दी से सर विल्फ्रेड को लेकर इस कमरे के बाहर पहुँचा दिया । यहाँ वही दोनों पहलेवाले जंगली खड़े थे जिन्होंने सर विल्फ्रेड को तुरन्त अपने बीच में कर लिया और आगे बढ़े ।

इस समय सूर्य अस्त हो चुके थे आकाश में लालिमा छिटक रही थी और उसके नीचे पृथ्वी पर अन्धकार बढ़ता जाता था! यहां लों कि अब दूर की कोई बस्तु स्पष्ट रूप से नहीं दिखलाई पड़ती थी !

सर विल्फ्रेड अपनी आई हुई राह पर लौट कर अपने साथियों में पहुँच गये । भला इस समय इनके मिलने से जो उनके साथियों को प्रसन्नता हुई होगी वह कौन कह सक्ता है? वे लोग खड़े हो गये और बार २ सर विल्फ्रेड के गले लगने लगे क्योंकि इन्हें तो वह अपने हिसाब मुरदाही समझे हुये थे।

"मैं तुम लोगों से एक सुसमाचार कहने वाला हूं", यह उन्होंने उस समय कहा जब उनके साथियों ने अपनी पूरी प्रसन्नता प्रगट करने के उपरान्त उन्हें कुछ बोलने का अवकाश दिया।

सर विल्फ्रेड—परन्तु हेक्टर ! सब से कुछ विशेष प्रसन्नता तुम्हें इस समाचार के सुने पर होगी । मेरे प्यारे ! मैं तुम्हारे पिता से अभी २ भेंट करके चला आता हूं ।

यह सुन्तेही हेक्टर सहसा पीला हो गया और क्षणैक के निमित्त अचेत सा हो गया परन्तु फिर पिंजड़े का सहारा लेकर

तुरन्त संभला और चिल्ला के कहने लगा। "मेरे पिता! ईश्वर धन्य! वह हैं कहाँ महाशय? और कुशल से तो हैं?"

सर विल्फ्रेड—वह बड़े आनन्द से हैं हेक्टर! हाँ बुढ़ापे के लक्षण तो अवश्यंही स्थान २ से उनके शरीर में झलकते दिखलाई पड़ते हैं। परन्तु तुम उनसे बहुतही शीघ्र साक्षात करोगे।

फिलिप—(सर विल्फ्रेड से) तो क्या आपने उन पर यह भी प्रगट कर दिया कि आप कौन हैं?

यह प्रश्न करती समय फिलिप के शब्दों से एक प्रकार की विचित्रता टपकती थी।

सर विल्फ्रेड—हाँ मैंने सभी कह दिया परन्तु कारणवश यह मैंने छिपा रक्खा कि तुम्हारा पुत्र तुम से इतना निकट है। कारण यह कि मैंनें यह तो अनुमान करही लिया था कि थोड़े काल में वह अपने पिता के सामने होगा।

सर विल्फ्रेड ने स्पष्ट रूप से कह दिया, कारण यह कि उन बेचारे को फिलिप के इस छल से भरी बातों की क्या खबर थी।

जब हेक्टर इत्यादि चुप हुये तो सर विल्फ्रेड ने सब वृत्तान्त उस भागने के मनसूबे सहित सब से कह सुनाया, परन्तु यह न प्रगट किया कि वह भागने की राह कौन सी है।

सर विल्फ्रेड—प्रातःकाल पर्यन्त तो ये जङ्गली हमलोगों को लेने आते नहीं इसलिये रात भर आनन्द से सब कोई सो

लो ! और आनन्द के अतिरिक्त यह नींद हम लोगों को प्रातः काल के कामों के निमित्त भी तो ताजादम बना देगी, जिसके द्वारा इस भयानक नगर और यहाँ की प्रजा से छुटकारा मिलेगा।

टौंक तो यह सुन्तेही एक कोने में जा लेटा और बहुत जल्द खर्राटे लेने लगा। सर विल्फ्रेड ने पिंजड़े का पेंदा गड़ने के कारण अपनी फतुही उतार कर उसकी तकिया बनाई और उसे सिरहाने रख यह भी आनन्द से सो गये। हाँ हेक्टर तथा फ़िलिप दोनों जागते रहे और इधर उधर की बातें करते रहे। इससमय हेक्टर तो अपनी पीठ ठीक दरवाजे के ओर किये बैठा था और फ़िलिप उसके सामने; अर्थात् अपना मुंह दरवाजे के ओर किये बैठा था। फ़िलिप बराबर दरवाजे पर उन संतरियों को पहरे पर देख रहा था जो लम्बा छुरा लिये इधर से उधर टहल रहे थे। कुछ देर के उपरान्त फ़िलिप ने देखा कि वे दोनों देव जो पहरे पर थे एक स्थान पर बैठ कर उँघाने लगे और फिर क्षणेक के उपरान्त पृथ्वी पर लोट कर सो गये। यह देख कर फ़िलिप ने उधर ध्यान भी न किया और वह हेक्टर से अपने तथा अपने साथियों के छुटकारे के बारे में बात चीत करता रहा।

बात चीत करते २ सहसा फ़िलिप की दृष्टि दो देवों पर पड़ी जो बहुतही चैतन्यता से पृथ्वीं पर चपट कर रेंगते हुये उन दोनों सोये हुये संतरियों के बीच से पिंजड़े की ओर बढ़ रहे थे। दोनों जंगली मादरजाद नंगे थे केवल इनके कन्धें पर ज-

नेऊ की तरह दो चौड़े चमड़े लटक रहे थे जिनसे लगे हुए दो लम्बे २ छुरे बार २ पृथ्वी से लग के चमक उठते थे। इन लोगों का काम ऐसे स्थान पर और यों दबे पैर आने से सिवाय इसके और क्या हो सक्ता था कि कैदियों में से किसी को अपने भोजन के निमित्त पकड़ ले जावें।

यह मालूम करतेही फिलिप की आँखों में एक विचित्र और डेरावनी चमक पैदा हो गई इस्के उपरान्त वह एकदम पीला पड़ गया और यहाँ लों वह पीला हुवा कि हेक्टर ने वहां के फैले हुये अन्धकार में भी इस अवस्था को भली भाँति देख लिया और आश्चर्य से पूछने लगा।

हेक्टर—क्या है भाई ?

फिलिप—कुछ नहीं; अब मुझे नींद आती है, और मैं सोने जाता हूं।

यह कह कर, वह सर विल्फ्रेड के बगल में अपने चेहरे को दोनों हाथों से छिपा कर जा लेटा और फिर दम साध ऐसे खर्राटे मारने लगा मानो घण्टों का पड़ा सो रहा है।

हेक्टर उस्की यह अवस्था देख कर और भी आश्चर्य में आया और चाहता था कि फिलिप से इसबारे में कुछ पूछे कि साथही कैदखाने के दरवाजे के पहिये की घूमने की खरखराहट सुन पड़ी : और हेक्टर ने इसे सुन कर पीछे देखने को गरदन फेरी ही थी, कि दो बलिष्ट देव इसपर टूट पड़े इस्का मुंह दृढ़ता

से बन्द कर दिया गया और वे उसे गोद में लेकर पिंजड़े के बाहर निकल गये।

## पैंतीसवाँ बयान।

बेचारा हेक्टर उस समय भली भाँति उन दोनों के हाथों में फँस गया था केवल एक घर्राटा तो उसके मुंह से सुनाई दिया परन्तु फिर वह एक शब्द न बोल सका। सर विल्फ्रेड इत्यादि तो वास्तव में घोर निन्द्रा के बशीभूत हो रहे थे परन्तु फिलिप यद्यपि जागता था और इस घटना को देखता था परन्तु तौभी कुछ न बोला और न स्वयमही उसनें किसी प्रकार की सहायता अपने साथी की की बरन उधर से उसने दृष्टिही फेर ली।

हेक्टर की दृष्टि से भी कुछ यह छिपा न था और उस्की इस चाल पर तुरन्त उसके चित्त में यह शंका उपस्थित हुई कि फिलिप ने निश्चय हमारे साथ दगा की है वह निस्सन्देह जागता था परन्तु हमारी सहायता उसने क्या न की ? इसका तात्पर्य क्या है ? वह कदाच इस भय से न दम साधे पड़ा हो कि कहीं उसे भी देव लोग उठा न ले जावें। परन्तु हमलोगों के दूर हटने पर अवश्य अपने साथियों को जगा देगा।

हेक्टर का रक्त इस ध्यान के आतेही चक्कर खाने लगा। और उसने एक अन्तिम उद्योग बड़ीही मेहनत से उन देवों के हाथों से छूटने का किया परन्तु खेद का विषय है कि

वह बच्चों के समान बड़ीही सरलता से उनके हाथों में दबा दिया गया और उनके एकही झटके से इसके सब उद्योग निष्फल हो गये।

दूर निकल जाने पर वह भय देवोंके चित्त से जाता रहा, और जायाही चाहे क्योंकि अब कोई ऐसी बस्तु उनके सामने न थी जिस्से उन्हें भय होता।

जङ्गली यहाँ कुछ देरतक ठहरे रहे और फिर एक ऐसे स्थान से होकर चले कि जिस जगह अग्नि जल रही थी और उस्के चारों ओर बहुत से जङ्गली पैर फैलाये सो रहे थे। यहाँ से वे और आगे बढ़कर एक संकरी और अन्धकारमय गली में पहुँचे, और इस्में से भी होकर अब एक सन्नाटी परन्तु चौड़ी सड़क पर से जाने लगे। दोनों, सड़क के दाहिने और बाँये ओर के साये में से इताना छिप २ के और धीरे २ चल रहे थे कि मानों कोई बिल्ली अपने शिकार पर घात लगाये दबे पाँव आगे बढ़ी जाती है। इनलोगों ने योंही लगभग एक चौथाई के जब इस सड़क को खतम की होगी तो दाहिने ओर एक घनी झाड़ी दीख पड़ी जिस्के काँटो की कोई परवाह न कर दो चार देव और भी उस्के भीतर बैठे हुये थे।

वे देव इन देवों और उनके हाथों में का शिकार देखकर बहुत प्रसन्न हुये। बहुतही कूद फाँदकर वे लोग भी इनके साथ हो लिये, और फिर जब यह मण्डली हेक्टर

को लिये एक ओर को जल्दी २ जाने लगी । और उनके आगे बढ़ते हुये प्रत्येक पग पर हेक्टर की हिम्मतें पिसी जाती थीं होते २ वह अन्त एकदम निराश हो गया ।

यह ध्यान उसे और भी अधमुवा किये डालता था कि ये लोग आगे उसे कहाँ लिये जाते हैं ? और किस मृत्यु से इसे मारेंगे ? साथही उसे जब फिलिप का ध्यान आता तो वह दाँत पीसने लगता जिसने इतने दिनों की मित्रता पर यों पानी फेर कर इतना बड़ा पाजीपना इस्के साथ किया था जो सम्भव नहीं कि एक अनजान मनुष्य भी किसी मनुष्य के साथ करेगा।

जब उसे वह दोनों जङ्गली बराबर हाथों पर उठाये आगे बढ़े जाते थे और वह अपने इन्हीं सब ध्यान में डूब रहा था तो उस्की दृष्टि सहसा सामने जा पड़ी तो देखा कि हमलोग एक सुनसान मैदान में जारहे हैं जिस्में कहीं कहीं वृक्ष भी लगे दिखलाई पड़ते हैं इस्के उपरान्तही एक मकान इसे दिखलाई दिया अब हेक्टर को स्मरण हुवा कि कदाच मैंने इस स्थान को इस्के पूर्व भी एकबार देखा है ।

यह अनुमान उस्का कुछही काल के उपरान्त अनुमान से बदल कर निश्चय के स्वरूप में हो गया ।

अब मनुष्य के खानेवालों का झुण्ड ठहर गया और हेक्टर को हाथों पर से उतारकर पृथ्वी पर खड़ाकर दिया । हाय ! हेक्टर ने अब अपने को कहाँ खड़ा पाया और उस्के सामने क्या था ? इसने अपने को ठीक उसी द्वार के सामने खड़ा पाय

जिस्में कि कुछ घण्टे पहले यह और कप्तान घुसे थे और उस्में जाकर यह मालूम हुवा था कि "यहीं राक्षस मनुष्यों को लाकर भून के खा जाते हैं"

* * * * * * *

अब यह भी तो आवश्यकीय है कि हम हेक्टर का वृत्तान्त छोड़कर उन कैदियों की ओर फिरें जो अपने एक साथी को गँवा कर पैर फलाये सो रहे हैं।

इनलोगों के नेत्र खुले तो कब, कि जब प्रातःकाल की हलकी-२ सुफेदी कैदखाने के चारों ओर फैल रही थी। देव लोग भोजन के निमित्त चिल्ला रहे थे।

पहिले तो सर विल्फ्रेड और टैंक जागे इस्के उपरान्त फिलिप सामान्य रीति से अँगड़ाई लेता आँखे मलता उठा और इधर उधर देखकर तथा रात की घटना स्मरण करके सिरसे पैर तक काँप गया।

हमारे सर विल्फ्रेड ने उठतेही पहिले अपने साथियों पर दृष्टि की तो उनमें से हेक्टर को न पाया। यह देखतेही उनका माथा ठनका और उन्होंने दोनों से इस्बारे में पूछा।

भला टैंक इस बारे में क्या जानता था जो कुछ वतलाता। हाँ फिलिप यह कहने लगा कि मैं और हेक्टर दोनों आपलोगों के सो जाने के उपरान्त जागते रहे। कुछ देर के उपरान्त जब मुझे नींद आने लगी तो मैं तो सो रहा परन्तु हेक्टर

कैदखाने के द्वार की ओर पीठ किये जागताही रहा, फिर इस्के उपरान्त मुझे यह नहीं मालूम कि क्या हुवा।

यद्यपि फिलिप ने इसे बड़ीही सफाई से कह सुनाया परन्तु अन्तिम शब्द कहते २ उस्का चेहरा पीला पड़ गया, और उसे सर विल्फ्रेड ने उस्के भय का कारण समझा। फिर वह कहने लगे:—

"नादान बालक ने अपने हाथों अपनी मृत्यु खरीदी। उसे अवश्य राक्षस अपने भोजन के निमित्त ले गये हैं, और अब इसबारे में शाह लागोस भी कुछ नहीं कर सक्ता। परन्तु क्या जब वे उसे ले जाते होंगे तो हमलोगों में से एक भी न जागा। मुझे बड़ा-ही खेद है, प्रथम तो उसके जाने का और दूसरे उस मनसूबे के टूटने, या कम से कम उस्में कुछ विघ्न पड़ने का, जिसे हमलोगों ने अपने छुटकारे के निमित्त ठीक किया था। अब यदि दो दिवस के भीतर वह लौट आया तो ठीक है नहीं फिर उस्का यहाँ से निकलना दुष्कर हो जायगा। अब फिलिप तुम एक बात का ध्यान रक्खो कि जब हमलोग शाह लागोस के यहाँ से बुलाये जाँयगे तो इस बात को राल्फ हालडेन से बिलकुल छिपा रक्खेंगे, जबलों कि हेक्टर के बारे में कोई निश्चय बात न सुन पड़े, मैं राल्फ से एक दूसरा किस्सा गढ़ कर समझा दूंगा।

फिलिप—बहुत अच्छा महाशय! आप निश्चिन्त रहिये कुल बातें आप के इच्छानुसारही की जावेंगी।

उधर गारद के सन्त्री इस घटना तथा अपनी चूक पर बड़ेही घबड़ाये हुये थे। उनका बार २ इधर उधर आना जाना तथा अपने मित्रों को बाहर की ओर भेजना और फिर उनका बिना हेक्टर या उस्के किसी समाचार के लौट आना यह सब जना रहा था कि ये लोग भी हेक्टर के मिलने का पूरा उद्योग कर रहे हैं परन्तु अभी तक सब निरर्थकही होता है।

सूर्योदय के एक घंरटे के उपरान्त उत्तमोत्तम भोजन कैदियों के सामने लाये गये जिन्हें इनलोगों ने बड़ीही इच्छा से खूब पेट भर के खाया, खा पीकर जैसेही ये लोग बैठे हैं, वैसेही शाही फौज के ६ जवान एक आरे से आ पहुँचे और फिर तीनों कैदियों को पिंजड़े या उस कैदखाने से निकाल कर बाहर किया।

सर विल्फ्रेड—अब हमलोगों को वह, एक विशेष समय मिलनेवाला है जिस्से कि कदाच फिर इस मनहूस पिंजड़े की सूरत न देखनी पड़ेगी।

और यथार्थ में बात ऐसीही थी। तीनों कैदी सिपाहियों के बीच में आगे बढ़ने लगे और फिर उन्हीं रास्तों से होते हुये जिसपर कि कल सर विल्फ्रेड लाये गये थे ये सब कोठरी में पहुँचा दिये गये जिसमें शाह लागोस मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ था, और जिस्के निकटस्थ की पत्थर की चारपाई पर बैठे हुये राल्फ हाल्डेन इन लोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे। सर विल्फ्रेड ने पहुँचतेही पहले यही बात कही—

"हमारे साथियों की गिनती एक के निकल जाने से घट गई और वह एक बड़ाही वीर तथा युवा पुरुष था" ।

हाल्डेन—( बात काट कर बड़े खेद से ) हाँ मैंने भी वह दुःखदाई घटना सुन ली है । और अब आप भी उस बुरे समाचार का परिणाम सुन लीजिये । रात के समय आप के संन्तरी सो गये और मैं जहाँलों अनुमान करता हूं उसी समय कुछ राक्षस आये होंगे और आप के साथी को पकड़ कर नगर के उजाड़ प्रान्त की ओर ले गये होंगे और फिर पूरी आशा है कि वहां ले जाकर उसे खा भी गये होंगे। राजा और न्याय का भय तो दुष्ट प्रजा के चित्त से एक दम उठही गया है और मुझे यह भी तो आशा नहीं है कि वे राजा की ओर से किसी प्रकार का दण्ड भी पावें ।

यह सुन्तेही सर विल्फ्रेड के नेत्रों से आँसुओं की लड़ियां निकलने लगीं । दयावान अर्ल ( राजा ) बड़ेही दुःख से दुखी होकर रोने लगे ।

सर विल्फ्रेड—( रोते २ ) हे परमेश्वर ! मृत्यु ने उसके साथ यह क्या किया ? बेचारा लड़का ! परन्तु मैं आशा करता हूं कि अब भी वह जीवित होगा ।

हाल्डेन—मैं भी तो यही कहता हूं कि आप आशा रक्खें, परन्तु ( कुछ सोच कर ) नहीं आप उसे मिटा दें कारण यह कि फिर उस ध्यान से आप के आगे के कामों में बड़ाही विघ्न पड़ेगा । आपने कल जो बात कही उसे जांति के बड़े बड़े

मनुष्यों ने स्वीकार की और हम लोगों को तीन दिन का अवसर मिला है कि जिसमें हम राजा को चंगा कर दें। उसकी आज प्रातः काल से एक तरह की बीमारी न तो घटीही है और न कुछ बढ़ीही! और एक बड़ाही बुरा समाचार सुन लीजिये। सिंह लोग आज के दिन से भूखे रक्खे जाते हैं कि यदि कहीं हम लोग तीन दिन में राजा को चंगा न कर सके तो वे हमें उनका भयानक आखेट बनने के लिये उनके पिंजड़े में छोड़ देंगे और भयानक सिंह तुरन्त नोच २ कर भक्षण कर जांयगे।

और दूसरी ओर यदि तीन दिवस के उपरान्त हम लोग राजा को जीवित रख सकेंगे तो वही दण्ड जो हमलोगों को मिलने को है जाति के जादूगर और डाक्टरों को जिन्हों ने भविष्यबाणी की है मिलेगा।

सर विल्फ्रेड—( शान्त स्वभाव से ) इसका दुःख कि मैं जीवित रहूँगा वा मर जाऊँगा मुझे कुछ भी नहीं है। परन्तु मैं और जो तीन जानों के बचाने का उद्योग करता हूं ईश्वर उससे मेरी सहायता करेगा। मैं अब इस काम के करने पर उद्यत हूं। हालडेन! तनिक अब यह तो बताओ कि शाहलागोस की क्या अवस्था है और यह कि हमलोग अब उसे कितने दिवस पर्यन्त और जीवित रख सकेंगे? मेरे पास ब्रांडी की आधी बोतल है यह तुम्हें मालूम है?